Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 4, April - 2025

DOIs:10.2018/SS/202504011 --:-- Research Paper / Article / Review

चित्रा मुद्गल की 10 प्रतिनिधि कहानियों में निरूपित समाज

डॉ. सुमन देवी
सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय दूबलधन, झज्जर, हरियाणा
ई-मेल आईडी sykadian@gmail.com

शोध सारांश: चित्रा मुद्गल आधुनिक कहानीकारों में से एक हैं। इनका साहित्य दलित, निम्न और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति से भरा हुआ है। इनके पास सामाजिक अनुभव का विपुल भंडार है। इन्होंने निम्न वर्ग के समाज के बीच रहकर काम किया है।

इनकी पुस्तक '10 प्रतिनिधि कहानियां' में संकलित सभी कहानियां समाज की परत उघाड़ती चलती हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य उन्हीं परतों को समाज के सामने रखना है, व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों में नवीन तथ्यों एवं नियमों की खोज करना है। इस शोध कार्य में नवीन तथ्यों की खोज, प्राचीन तथ्यों की नवीन ढंग से विवेचना और वर्तमान सिद्धांतों की उपयुक्तता का परीक्षण करना है।

बीज शब्द: समाज, मूल्य, संप्रदाय, जाति, मर्यादा, वर्ग भेद, मनःस्थिति, पीडा, आत्मसम्मान, संवेदना, मार्मिकता।

1. आमुख :

चित्रा मुद्गल का जन्म 10 दिसंबर 1944 को चेन्नई में हुआ। उनकी शिक्षा दीक्षा मुंबई में हुई। चित्रा मुद्गल आधुनिक कथा साहित्य की बहुचर्चित, सम्मानित और प्रतिनिधि रचनाकार हैं। प्रखर चेतना की संवाहिका चित्रा जी अपने साहित्य में समाज के हर वर्ग को जीवंत कर देती है। इनकी कहानियों को आधार बनाकर अनेक धारावाहिक भी निकले हैं और कई टेलीफिल्मों का भी निर्माण हुआ है। समाज की विद्रूपताओं का चेहरा ये जिस प्रकार सामने रखती हैं वह चकित कर देने वाला है। व्यास सम्मान से सम्मानित चित्रा मुद्गल की 10 प्रतिनिधि कहानियों में जिन कहानियों को सम्मिलित किया गया है वे हैं-

गेंद, लेन, जिनावर, जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं, भूख, प्रेत योनि, बली, दशरथ का वनवास, केंचुल, बाघ। इनकी कहानियां बड़े ही साधारण तरीके से शुरू होती हैं और पाठक को अपने साथ जोड़ लेती हैं।

2. समाज शब्द का अर्थ व परिभाषा-

समाज शब्द का अर्थ प्रायः लोगों के समूह से लगाया जाता है। लेकिन समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ में किया जाता है। यहां समाज केवल व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं है, प्रत्युत पारिवारिक संबंधों की व्यवस्था तथा सामाजिक संबंधों का समाहार है।

हिंदी विश्व कोश में 'समाज' का अर्थ इस प्रकार दिया है-

'संज्ञा, पु० (स०) समूह, सभा, समिति, दल, वृंद, समुदाय, संस्था, एक स्थान निवासी तथा समान विचारधारा वाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य समाजा"1

डॉ० संपूर्णानंद के अनुसार "जिसमें लोग मिलकर, एक साथ एक गति से एक से चले वही समाज है। एक साथ या एक से चलने का अर्थ फौजी सिपाहियों की भांति चलना नहीं है बल्कि तात्पर्य तो यह है कि उन लोगों की परिस्थिति, उनके प्रयत्न एवं उद्देश्य एक जैसे हो, जो समाज का एक अंग हैं। 2

इस प्रकार समाज एक मूर्त संगठन नहीं है अपितु सामाजिक संबंधों की अमूर्त व्यवस्था है। व्यक्तियों की उद्देश्य पूर्ण क्रियाओं से ही सामाजिक संबंध उत्पन्न होते हैं। एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ती है और वह एक दूसरे के समीप आते हैं। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। समाज और साहित्य का गहरा संबंध है। साहित्यकार समाज की सूक्ष्म और संवेदनशील परिस्थितियों से ही विषय ग्रहण करता है और उसे अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार समाज में जो कुछ देखा है, सुनता है, और अनुभव करता है, उसे केवल साहित्यिक रूप प्रदान करके समाज के सामने नहीं रखता बल्कि उसकी समाज के संदर्भ में उपयोगिता का भी ध्यान रखता है। इस प्रकार साहित्य समाज का प्रतिबिंब ही नहीं होता बल्कि समाज को दिशा प्रदान करने का कार्य भी करता है।

3. वृद्ध जीवन की समस्या-

चित्रा मुदगल जी एक प्रभावपूर्ण संवेदनात्मक शैली में सिद्धहस्त रही हैं, इनकी कहानियों में वर्णित समाज का संवेदनशील पक्ष पाठक को अंदर तक झकझोर देता है। इनका दृष्टिकोण समाज के एक पहलू से न होकर सभी पहलुओं को समेटे हुए हैं, चाहे वह भ्रष्टाचार की समस्या हो, नारी समस्या हो, दलित हो, गरीब हो, किसान हो, मजदूर हो, बच्चों और बुजुर्गों का अकेलापन हो या फिर दोहरे उत्पीड़न का शिकार पुरुष हो। वृद्ध जीवन का बड़ा ही मार्मिक चित्रण उन्होंने अपनी कहानी गेंद के माध्यम से किया है। कहानी में केवल सचदेवा जी' ही नहीं उनके सामान अनेक बुजुर्गों की मार्मिक दशा को भी उजागर किया है। जीवन के इस पड़ाव में पहुंचकर ये बुजुर्ग दुनिया की भीड़ नहीं चाहते, बल्कि अपनों के साथ रहना चाहते हैं, लेकिन उनके अपने इन्हें दुनिया की भीड़ में धकेल देते हैं, जहां ये अकेले तो नहीं हैं, पर भीतर से बिल्कुल अकेले हैं। यहां इनके पास व्यक्ति हैं पर रिश्तों की गरमाहट नहीं है, जो इन्हें जीवनी शक्ति दे सके। सचदेवा जी बिल्लू से 'दादा जी' शब्द को सुनने के बदले गेंद ढूंढने को तैयार हो जाते हैं वे कहते हैं-

'चलो, मुझे दादाजी पुकारा करो, पुकारोगे न ? सहसा उनका गला भर्रा आया। हैरत हुई स्वयं पर।

"पुकारूंगा, पर मेरी गेंद ढूंढ कर देनी होगी आपको।"

" ढूंढ दूंगा। पहले पुकारो।"

" दादाजी, मेरी गेंद ढूंढ दीजिए न। 3

अपनों के ऐसे शब्द सुनने के लिए ये बुजुर्ग हमेशा प्रतीक्षा में रहते हैं। इस कहानी में लेखिका ने आधुनिकता की होड़ में आगे बढ़ाने की प्रतियोगिता में शामिल हुए उन युवाओं और उनके पीछे बुजुर्ग माता-पिता की ऐसी दयनीय स्थिति को उजागर किया है जो सोचने पर मजबूर करती है। बुजुर्ग ही नहीं बच्चे भी अकेलेपन के शिकार होते जा रहे हैं। कहानी में सचदेवा जी ही नहीं, बिल्लू भी उनके साथ समय व्यतीत करना चाहता है। जब सचदेवा जी जाने की बात करते हैं तो बिल्लू कहता है-

अरे नई-नई दादाजी, मत जाइए न! प्लीज !

बच्चे ने नन्ही हथेलियां नचाई गेंद गुम हो गई है, अकेले खेल भी नहीं सकता न।"

लेखिका ने समाज का स्वार्थी चेहरा उजागर किया है, जहां बुजुर्ग बच्चों के साथ और बच्चे बुजुर्गों के साथ रहना चाहते हैं, लेकिन विडंबना देखो बच्चों को शिशु गृह में, प्ले स्कूलों में और बुजुर्गों को वृद्धाश्रम में डाल दिया जाता है।

4. निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण-

चित्रा मुदगल समाज से अच्छी तरह से परिचित होकर, उसे आत्मसात करके वाणी प्रदान करती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाएं अपने समय के प्रश्नो से पाठकों को रूबरू कराती हैं। लेखिका की दृष्टि समाज के सभी रूपों पर है। समाज में निम्न और मध्यमवर्गीय जीवन का चित्रण अपनी कहानी जिनावर में इस प्रकार करती हैं कि प्रेमचंद की कहानी 'कफन' याद आ जाती है। गरीबी व्यक्ति को किस स्तर पर ले जाती है इस बात का अंदाजा असलम की तिरोहित हुई दया से लगाया जा सकता है। असलम अब जान चुका था कि सरवरी तांगा खींचने लायक नहीं रही, इसलिए वह जानबूझकर सरवरी को गाड़ी से भेंट देता है, ताकि उसकी कीमत वसूल कर सके। सरवरी के मर जाने के बाद उसे आत्मग्लानि भी होती है कि उसने पैसों के लालच में सरवरी को समय से पहले मौत के मुंह में झोंक दिया।

" नहीं, वह जुदा नहीं हुई, उसके जुदा होने से पहले ही मैंने उसे मार दिया, मैंने उसकी मौत से सौदा कर लिया बीवी! जानबूझकर उसे गाड़ी से भेड़ दिया, यही सोचकर, अपनी मौत तो वह मरेगी ही आगे पीछे किसी गाड़ी से भेड़ दूंगा तो वह मरते मरते अपनी कीमत अदा कर जाएगी ये नोट, नोट नहीं, मेरी सरवरी की बोटियां हैं, बोटियां।

लेखिका ने केवल एक बेजुबान जानवर की मार्मिकता का वर्णन नहीं किया है बल्कि पाठक का हृदय असलम के लिए भी द्रवित हो उठता है। एक व्यक्ति अपनी गरीबी में किस हद तक संवेदनहीन हो जाता है इसका एक जीवंत उद्धारण लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

समाज और समाज से जुड़ी समस्याओं में गरीबी एक ऐसी समस्या है जो समाज को खोखला कर देती है। गरीब व्यक्ति समाज के विकास में सहायक नहीं बन सकता। गरीबी के कारण व्यक्ति का नैतिक, सामाजिक और आत्मिक पतन भी हो जाता है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'भूख' में उन्होंने व्यक्ति की भूख का ऐसा चित्रण किया है कि पाठक द्रवित हो उठता है। लक्ष्मा के पति की मृत्यु के उपरांत तीन बच्चों का पेट भरने के लिए उसे दर-दर भटकना पड़ता है। कोई काम उसके पास नहीं है यद्यपि वह मेहनत मजदूरी का हर काम करने को तैयार है, फिर भी वह दो जून की रोटी नहीं कमा पा रही है। कंतू मजदूर की लकवा ग्रस्त मां के बारे में वह सोचती है कि अगर उसकी मां ठीक ना हो तो कंतू के स्थान पर उसे काम मिल सकता है। परंतु हर दिशा से निराश लक्ष्मा विवश होकर अपने छोटे दूध मुंहे बच्चे को भिखारिन के पास किराए पर दे देती है, ताकि बाकी दो बच्चों का पेट भर सके। गरीबी और लाचारी का ऐसा उदाहरण समाज और आजादी के उपरांत के विकास पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। चित्रा मुद्गल मानती हैं कि सामाजिक विसंगतियों का दोषी व्यक्ति नहीं, व्यवस्था है। जिस व्यवस्था में काम चाहने वालों को भी काम नहीं मिल पाता उस व्यवस्था में अकर्मण्य व्यक्तियों का क्या होगा? लक्ष्मा, सावित्री, सुक्खन भौजी, असलम ऐसे पात्र हैं जो गरीबी का दंश सह रहे हैं। गरीब व्यक्ति की परिस्थितियों चाहकर भी उसे स्वाभिमानी, निर्भीक और नैतिक नहीं बनने देती। अगर गरीब व्यक्ति स्वाभिमान और नैतिकता का दामन

पकड़ता है तो उसके प्राण उसका दामन छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसा ही कुछ लेखिका की कहानी 'लेने' में नजर आता है। पति के हमलावरों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने के पक्ष में खड़ी महेंदरी उस समय टूट कर बिखर जाती है जब डॉक्टर ने बताया कि उसका पति अब रिक्शा नहीं खींच पाएगा। "वह औरत होकर भी इतनी मुसीबत से लड़ रही है"। लेकिन लड़ने से उसका पेट नहीं भर सकता इस बात को वह भली-भांति जानती है। पुलिस और डॉक्टर हर कदम पर उसका साथ दे रहे हैं फिर भी परिस्थितियां उसे मजबूर कर देती हैं हमलावरों से सौदा करने पर। 'केंचुल की कमला भी निडर और स्वाभिमानी होते हुए भी परिस्थितियों के सामने विवश है।

5. झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा की समस्या-

'प्रेतयोनि' कहानी के माध्यम से लेखिका ने नारी को अपनी अस्मिता हेतु संघर्ष करते हुए और उसमें उसकी पराजय का बोध कराती हुए झूठी सामाजिक मान मर्यादा और दिखावे के भाव को झकझोरा है। भले ही देश सती प्रथा और पर्दा प्रथा से प्रत्यक्ष रूप से मुक्त हो गया हो, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से नारी समाज में इन कुप्रथाओं की शिकार हर दिन बन रही है। अपनी मान मर्यादा की बहादुरी से रक्षा करने वाली नीतू अपने ही परिवार के झूठे दिखावे के सामने विवश हो जाती है। अपने बाबूजी के अपने प्रति बदले व्यवहार को देखकर वह याद करती है-"बाबूजी कहते थे न-बेटियां ही मेरे बुढ़ापे की लकुटियां बनेंगी।, जब वे लड़कियों के हाथों से स्वयं उनकी ही लकुटियां छीन, उन्हें अबला बनाने पर तुले हुए हैं तो, वह उनके बुढ़ापे का सहारा कैसे बन सकती हैं।" खोखली सामाजिक मर्यादा के समक्ष नीतू हार मान लेने को तैयार हो जाती है और आत्महत्या करने को आगे बढ़ती है लेकिन अगले ही पल उसे अखबार में छपी उस खबर का स्मरण हो आता है जिसमें छपा था कि दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी साथी नीतू के साथ बलात्कार की कोशिश करने वाले दुराचारी टैक्सी ड्राइवर को पकड़वाने के लिए आईटीओ मुख्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन करेंगे। वह अपना विचार बदल लेती है और अपनी लड़ाई पूरे आत्मसम्मान से लड़ने का निर्णय लेती है। लेखिका का इस प्रकार नीतू के माध्यम से यह सब दिखाना आज की नारी के लिए प्रेरणा है। जब तक वह स्वयं अपनी अस्मिता, अपने सम्मान और अपने अस्तित्व के लिए नहीं लड़ेगी तब तक उसे कहीं स्थान नहीं मिलेगा। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए नीतू अपना समस्त साहस बटोर कर अपने परिजनों से ही प्रतिकार करने को तैयार हो जाती है। लक्ष्मा भी जीवन जीने की हर संभव कोशिश करती है। सुक्खन भी हार नहीं मानती और बिल्लू की मां भी अपने परिवार के लिए बाहर जाकर काम करती है।

6. नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के विचारों में मतभेद की समस्या-

लेखिका भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण का भाव रखती हैं। वह भारतीय परंपरा के अनुसार बच्चों के पालन पोषण पर बल देती हैं। हमारी डांट फटकार में ही आने वाली पीढ़ी का भला छिपा हुआ है, यहीं से उनमें सहनशीलता और परिश्रमी बनने का गुण पनपता है। यही रोक-टोक उनके दायरे निश्चित करती हैं इसी के परिणाम स्वरुप उनमें विवेक पैदा होता है। कहानी 'दशरथ का बनवास' में रमानाथ और उसके पिता के संबंध अच्छे नहीं रहे, इसी का परिणाम था कि रमानाथ अपने पिता की मृत्यु के समय भी उसके पास नहीं पहुंचा। उसके पिता का कसैला व्यवहार रमानाथ के प्रति घृणा और क्रोध नहीं था अपितु रमानाथ भविष्य में उद्दंड न बन जाए इसकी चिंता थी, लेकिन रमानाथ इस बात को समझ नहीं पाया। लेकिन लेखिका अपनी संस्कृति के साथ रही और कहानी के अंत में रमानाथ को अपने पिता के सच्चे प्रेम का आभास होता है, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होती है। उसके पिता के अंतिम शब्द बार-बार उसके कानों में पश्चाताप की अग्नि पिघलाकर डाल रहे थे “चि. बबुन । सोचा था तुम दफ्तर जाने लगोगे तब तुम्हें यह साइकिल भेंट करूंगा। तुम दफ्तर जाने लगे, मगर तुमसे भेंट नहीं हो पाई... तुम्हारी अमानत अब नहीं संभाल पा रहा, तुम्हारे पास भिजवा रहा हूं।“ लेकिन आने वाली पीढी ममता की पीड़ा को नहीं समझ पाती है। पिछली पीढी अपनी संतान की संभावित पीड़ा, संकट की कल्पना मात्र से ही विचलित हो जाती है। उन्हें यह आभास ही नहीं रहता कि अब संतान समर्थ हो गई है। केंचुल में कमला सरना के व्यवहार से परेशान हो जाती है। कमला उसके भविष्य को लेकर चिंतित है। 'इन्हीं के लिए तो खटती-मरती हूं पैदा होते ही तो नहीं कमाने लगी थी। इसी प्रकार प्रेतयोनि की नीतू अपने माता-पिता से विद्रोह कर उठती है। ना तो वह अपने माता-पिता की मनःस्थिति को समझ पा रही है और ना ही माता-पिता उसके स्तर तक पहुंच पा रहे हैं। वर्तमान समाज में व्याप्त असुरक्षा की भावना ने रिश्तों को भी हिला दिया है। यही कारण है कि कभी राम बनवास भोग रहा है, कभी सीता, कभी लक्ष्मण और कभी दशरथ का वनवास हो जाता है। लेखिका की कहानियों में

अंतर वेदना को स्वर मिला है। हर माता-पिता को अपनी संतान का इस प्रकार का व्यवहार विचलित कर देता है और संतान उनके इस द्वंद्व को समझ नहीं पा रही है।

7. जातिवाद की समस्या-

जाति व्यवस्था समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है। जाति व्यवस्था समाज के हर वर्ग को अपनी चपेट में लिए हुए हैं। कभी सोचा नहीं होगा कि समाज को व्यवस्थित बनाने के लिए चलाई गई वर्ण व्यवस्था एक दिन समाज को अव्यवस्थित कर देगी। जातियों ने मनुष्य जाति को बांट दिया है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'बाघ' में जातियों के कारण मनुष्य के संपूर्ण जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को लक्षित किया है। एक जाति दूसरी जाति के लिए बाघ बनकर बैठी है। जिस जाति की बहुलता कम हुई उसके सिर पर जैसे यमराज का साया छा गया हो, एक अनहोना डर हर वक्त उसे सताता रहता है। दूसरी बिरादरी का एक घर ऐसे मोहल्ले में सुरक्षित महसूस नहीं कर सकता जहां किसी एक बिरादरी की प्रधानता हो। कहानी बाघ में मिस्टर ख केवल इस कारण से अपना घर औने-पौने दामों में बेचने को तैयार हो जाता है क्योंकि पुरोहितों के बीच उसकी जाति का वह अकेला एक घर था। मिस्टर ग इस बात का पूरा फायदा उठाना चाहता है और पुरोहित जी को सस्ते दामों पर वह घर दिलवाने का जुगाड़ लगता है। लेकिन लेखिका इस समस्या को अपनी कहानी में हवा नहीं देना चाहती, वह पुरोहित जी की सोच को जातिवाद से ऊपर ले जाती है। पुरोहित जी सारा मामला समझ जाते हैं, उनकी आत्मा उन्हें इस प्रकार घर खरीदने की अनुमति नहीं देती और वे इसके लिए तैयार नहीं होते। वे कहते हैं "मैं आदमी ही बना रहना चाहता हूँ।

8. कुत्सित राजनीति का चित्रण-

चित्रा मुद्गल ने समाज में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार का उदाहरण 'जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। राजनीति की मूल्यहीनता का सबसे बड़ा प्रमाण भ्रष्टाचार है। राजनेताओं ने देश के साथ क्रूर मजाक किया है। जहां गरीब व्यक्ति के पास दो जून की रोटी भी नहीं है, उन गरीबों को भी वे सीढ़ियों की तरह प्रयोग करते हैं। गरीबों को आश्वासनों का लॉलीपॉप देकर स्वयं मलाई चाटने में लगे रहते हैं। कहानी में ठाकुर सुमेर सिंह और जगदंबा बाबू 'विकलांग उद्धार समिति के नाम पर केवल अपना ही वोट बैंक बढ़ा रहे हैं। गरीबों से उन्हें कोई सरोकार नहीं है। सहायता का केवल ढोंग करने वाले जगदंबा बाबू सुक्खन के ललौना को दी गई पहियों वाली गाड़ी कुछ समय बाद ही वापस मांग लेते हैं। ठाकुर सुमेर सिंह सुक्खन भौजी से कहते हैं-"दरअसल कल बीघापुर में 'विकलांग उद्धार समिति का दूसरा समारोह है। जगदंबा बाबू को पहले ही की तरह अपाहिज़ों को उपहार वितरित करने हैं... कार्यक्रम घोषित हो चुका है... आसपास से हजारों की तादात में जनता पहुंच रही है। चुनाव निकट हैं।... जो गाड़ी ललौना को भेंट की गई है, वापस चाहिए। एकाध रोज में ललौना के लिए मजबूत बैसाखियां बनवा देंगे, वह आराम से चल फिर सकेगा1 लोकतांत्रिक संस्थाओं और उपकरणों पर धब्बा लगाने वाले जनप्रतिनिधियों के खोखले भाषण और असली चेहरे को लेखिका ने उजागर किया है। जनता जिन हाथों को सशक्त और रक्षक समझकर सत्ता की बागडोर सौंपती है वे ही उसका दुरुपयोग करके जनता को बेकारी, भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, हिंसा, लूटपाट और असुरक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं देती। वे अपनी स्वार्थी प्रवृति से अपना पोषण और जनता का शोषण करते हैं। सारे आश्वासन, योजनाएं, समस्त संभावनाएं सरकारी फाडलों तक ही सीमित रह जाती है।

9. निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल की कहानी जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं को उठाकर, एक बड़ा संदेश समाज को संप्रेषित करती हैं। इनकी कहानियां समाज की विद्रूपताओं को सामने ही नहीं करती अपितु उनके समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। पाठक कहानियों के साथ प्रवाहित हो जाता है। वह कहानियों को जीता है, कहानियां उसे उद्द्वेलित भी करती हैं और सोचने पर विवश भी करती हैं। लेखिका ने सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उनकी 10 प्रतिनिधि कहानियां सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों को उजागर कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त कमियों को मिटाने की पक्षधर हैं। वे जहां शासकीय व्यवस्था का विरोध करती हैं वही वैयक्तिक विकृतियों पर भी कटाक्ष करती हैं। सामाजिक यथार्थ को वे अद्भुत भाषा और संवेदना के साथ पाठक के मानसिक स्तर पर पहुंचा देती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1 डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र, हिंदी विश्वकोश, भाग-5, पृष्ठ 1878
2 डॉ. संपूर्णानंद, समाजवाद, पृष्ठ-19
3 चित्रा मुद्गल, 10 प्रतिनिधि कहानियां, पृष्ठ- 20
4 वही, पृष्ठ- 21
5 वही, पृष्ठ- 68
6 वही, पृष्ठ- 37
7 वही, पृष्ठ-100
8 वही, पृष्ठ- 139
9 वही, पृष्ठ- 154
10 वही पृष्ठ- 168